समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

● प्रकाशन दिनांक : १५ मई २०१४

● वर्ष : १७ ● अंक : ११ (निरंतर अंक : २०३)

मासिक समाचार पत्र

कुछ वर्ष पूर्व पूज्य बापूजी ने श्री नरेन्द्रभाई मोदी को आशीर्वाद देते हुए कहा था : ''हम आपको देश के प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहते हैं।'' पूज्य बापूजी का वह संकल्प साकार हुआ है। (पढ़ें पृष्ठ ५)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी

श्री राजनाथ सिंह

श्री लालकृष्ण आडवाणी

श्री शिवराज सिंह चौहान

श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया

डॉ. रमण सिंह

श्री नितिन गडकरी

सुश्री उमा भारती

डॉ. मुरली मनोहर जोशी

पूज्य बापूजी के सत्संग-सान्निध्य का लाभ लेकर आशीर्वाद प्राप्त करते हुए भाजपा के वरिष्ठ राजनेता

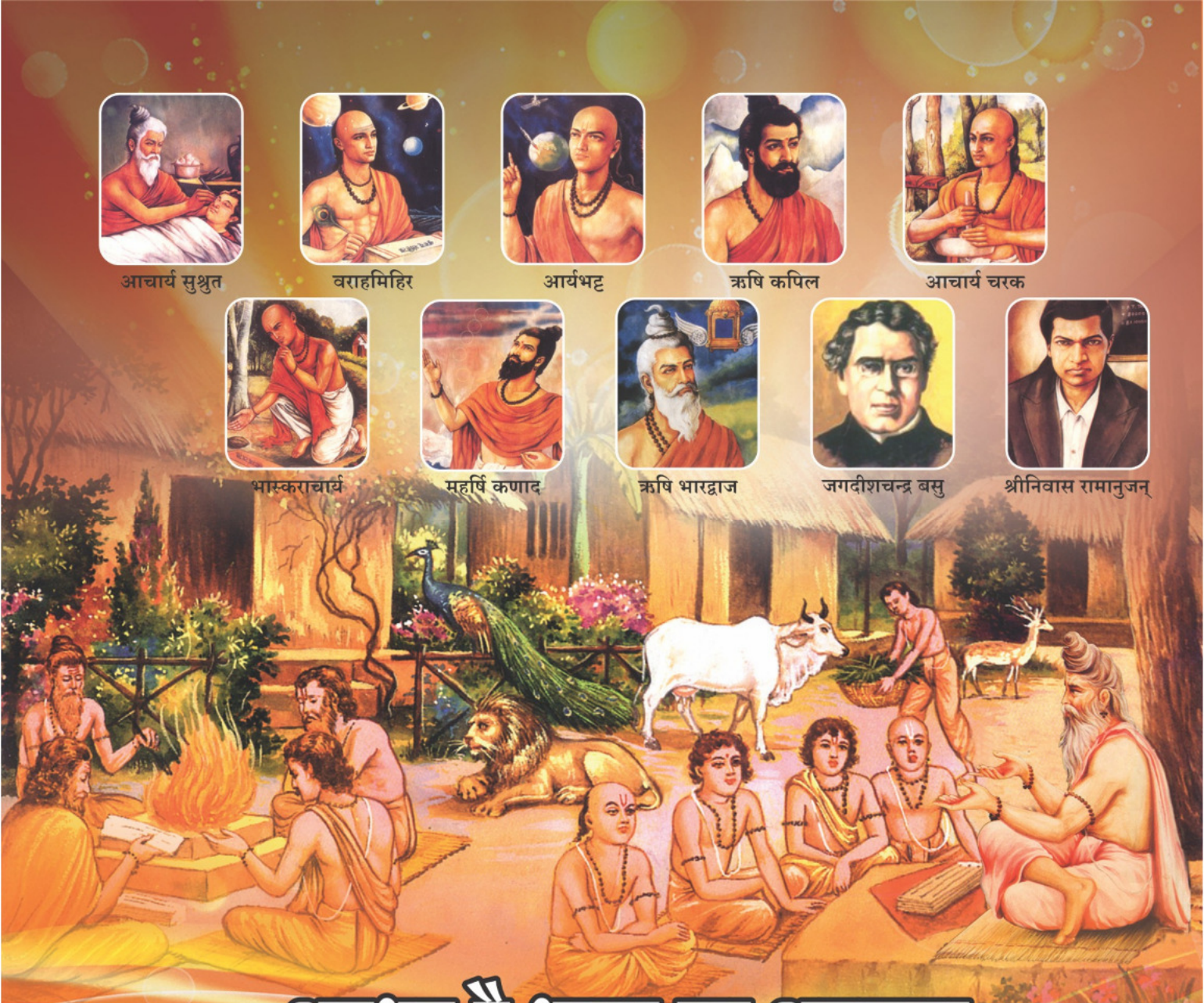

अद्भुत है भारत का अनसुना वैज्ञानिक और सांस्कृतिक इतिहास !

अंग्रेजों ने गुलाम बनाने के इरादे से कूटनीति द्वारा भारत को खंड-खंड तो कर दिया था लेकिन सांस्कृतिक मूल्यों और आत्मिक वैभव से सम्पन्न भारतवासी उन पर फिर भी भारी पड़ रहे थे। तब लॉर्ड मैकाले के सुझाव पर ब्रिटिश शासन द्वारा हमारी उत्कृष्ट प्राचीन गुरुकुल परम्परा को हटाकर नयी शिक्षा-पद्धति लागू की गयी थी। और वही शिक्षा-प्रणाली आज भी भारत में स्थापित है।

इस शिक्षा-पद्धति के परिणाम देश के लिए बड़े ही घातक सिद्ध हो रहे हैं। इस पद्धति से पढ़कर निकले विद्यार्थियों में प्रायः दासबुद्धि पायी जाती है। उनमें अपने देश व अपनी वैभवशाली भारतीय संस्कृति के प्रति हीनभाव और विदेशी सभ्यता, रीति-रिवाजों के प्रति उच्चभाव देखने को मिलता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि अपने साम्राज्यवादी मंसूबों को सफल करने के लिए अंग्रेजों ने इतिहास से भारतीय संस्कृति की गरिमा को लुप्त कर दिया और हमारी गौरवशाली वैज्ञानिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों को अपने नाम कर लिया या तो छुपा दिया। आज से १००० वर्ष पूर्व भारत की तकनीक तथा विज्ञान विश्व में सबसे अधिक विकसित था।

प्रसिद्ध लेखक स्टीफन नैप ने अपनी किताब 'बेसिक पॉइन्टस अबाउट वैदिक कल्चर/हिन्दुइजम : ए शोर्ट इन्ट्रोडक्शन, भाग-२' में भारत के गौरवपूर्ण इतिहास और उसके द्वारा विश्व को दी गयीं अमूल्य खोजों के बारे में संक्षिप्त संकलन प्रस्तुत किया है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

हिन्दी, गुजराती, मराठी,ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १७ अंक :११
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक :२०३)
१५ मई २०१४ मूल्य : ₹ ३.५०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : राजेश बी. कारवानी
सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स,कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क :

भारत में :

(१) वार्षिक : ₹ ३० (२) द्विवार्षिक : ₹ ५०
(३) पंचवार्षिक : ₹ ११० (४) आजीवन : ₹ ३००

विदेशों में :

(१) पंचवार्षिक : US $ 50
(२) आजीवन : US $ 125

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय,
संत श्री आशारामजी आश्रम,
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती,अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन :(०७९) ३९८७७७३९/८८,
२७५०५०१०/११.

e-mail :1) lokkalyansetu@ashram.org 2) ashramindia@@ashram.org
Website : 1) www.lokkalyansetu.org 2) www.ashram.org

Opinions expressed in this news paper are not necessarily of the editorial board.Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक और सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

इस अंक में

- अद्भुत है भारत का अनसुना वैज्ञानिक और सांस्कृतिक इतिहास ! २
- विद्यार्थियों से दो बातें ४
- महापुरुषों का भारत को विश्वगुरु बनाने का सत्यसंकल्प श्री नरेन्द्र मोदी जैसे कर्मयोगियों से शीघ्र साकार होगा - श्री आर.सी. मिश्र ६
- कहीं हम भी प्यासे न मर जायें ! १०
- फास्टफूड से याददाश्त होती है कमजोर १३
- सच्चे मन से सेवा, देती ईश्वरकृपा का मेवा १४
- महापुरुषों का दिव्य प्रभाव १५
- कैसा हो शिष्य का मनोभाव ? १६
- घर में खुशहाली व बरकत के लिए करें ये उपाय १६
- दुष्कर्म के झूठे केस बने रुपये ऐंठने के साधन - श्री आर.एन. ठाकुर १७
- संत-सम्मेलन, छिंदवाड़ा १८
- शशकासन १९
- गर्मी में शीतलता हेतु सरल प्रयोग २०
- देशभर में हो रहे हैं विद्यार्थियों के लिए विशेष शिविर २१
- गाय का दूध पीनेवाले बच्चे होते हैं ज्यादा समझदार व ताकतवर २२
- गुरुकृपा से विदेश में बजा भारत का डंका २३
- सर्वांगीण विकास की कुंजियाँ २३
- स्वर्ग-सुख तो चिपक ही जायेगा २४

◆ टी.वी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ◆

A2Z NEWS
रोज सुबह ७-३० बजे, रात्रि १० बजे

सुदर्शन NEWS
रोज सुबह ६.३० बजे

मंगलमय
www.ashram.org पर उपलब्ध

विद्यार्थियों से दो बातें

– पूज्य बापूजी

जब से भारतवासी 'गीता' की महिमा भूल गये, सत्संग की महिमा भूल गये, 'रामायण' की महिमा भूल गये, तब से वे पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण के शिकार बन गये । नहीं तो भारत के नन्हे-मुन्ने बच्चे विश्वविख्यात विदेशियों को भी चकित कर दें - ऐसा उनमें सामर्थ्य है। गीता, रामायण अथवा सत्संग की पुस्तकों का वाचन-श्रवण-मनन अवश्य करना चाहिए । माला से अथवा मानसिक जप करने की तथा परमात्म-ध्यान में, परमात्म-मस्ती में मस्त रहने की आदत डाल लेनी चाहिए । फिर जेल भी वैकुंठ हो जाता है।

आज का विद्यार्थी कल का नागरिक है। विद्यार्थी जैसा विचार करता है, वह देर-सवेर वैसा ही बन जाता है। जो विद्यार्थी परीक्षा देते समय सोचता है कि 'मैं प्रश्नों को हल नहीं कर पाऊँगा... मैं पास नहीं हो पाऊँगा...' वह अनुत्तीर्ण हो जाता है और जो सोचता है कि 'मैं सारे प्रश्नों को हल कर लूँगा... मैं पास हो जाऊँगा...', वह पास भी हो जाता है । जो सकारात्मक सोचता है वह सफलता की ओर आगे बढ़ता है और नकारात्मक, फरियादात्मक विचारवाला स्वयं ही अपने लिए खाई खोदता है।

मनुष्य के अंदर कितनी अद्‌भुत शक्तियाँ छिपी हुई हैं, इसका उसे पता नहीं है। जरूरत है तो सिर्फ उन शक्तियों को जगाने की। हमें कभी निर्बल विचार नहीं करना चाहिए।

वो कौन-सा उकदा है जो हो नहीं सकता ?
तेरा जी न चाहे तो हो नहीं सकता।
छोटा-सा कीड़ा पत्थर में घर करे।
इन्सान क्या दिले-दिलबर में घर न करे ?

कुछ भी असम्भव नहीं है, सब सम्भव है। अपने विचारों को हमेशा निर्भीक, उत्साहित और सत्त्वगुणसम्पन्न बनाना चाहिए। विद्यार्थीकाल में जो सोचते हैं कि 'मैं ऐसा बनूँगा... वैसा बनूँगा... यह करूँगा... वह करूँगा...', वे आखिर वैसे बनते ही हैं।

जो सोचते हैं कि 'मैं समाज का नेतृत्व करूँगा... मैं ईमानदारी से सेवा करूँगा...', वे अच्छे एवं श्रेष्ठ नेता बनते हैं और जो बचपन में ऐसा सोचते हैं कि 'मैं महान संत बनूँगा...', वे संत भी बन जाते हैं।

हम जब विद्यार्थी थे तब सत्संग में जाते थे और सोचते थे कि 'ये महाराज कितने अच्छे हैं ! ईश्वरीय चर्चा करते हैं व ईश्वर में मस्त रहते हैं। मैं भी आत्मा-परमात्मा को पाऊँगा और उसकी मस्ती में मुक्तात्मा होऊँगा ।' मैं बाल्यावस्था में था तब ऐसा सोचा तो आज उसी जगह पर भगवान ने बिठा दिया।

जो जैसा सोचता है और तदनुसार ही करता है, वह वैसा बन भी जाता है । किंतु शेखचिल्ली जैसा विचार न करें। कोई अपने विचारों के अनुसार उद्योग करे, सत्संग और शास्त्र-अवलोकन करे तथा उसी प्रकार के दृढ़ विचार करे तो वह वैसा ही बन जायेगा।

केवल बालक ही नहीं, बालिकाएँ भी पुरुषार्थ करें । हे भारत की माताओ, बेटियो ! तुम अपनी महिमा में जागो । हिम्मत करो । सिनेमा देखकर या 'डिस्को' नृत्य करके अपनी जीवनशक्ति नष्ट करनेवालों को वह भले मुबारक हो किंतु तुम तो भारत की शान हो । हे माताओ-बहनो-बेटियो ! तुम फिर से अपनी आध्यात्मिक शक्ति जगाओ । यहाँ तक कि ब्रह्मा-विष्णु-महेश भी माँ अनसूया के द्वार पर भिक्षा माँगने पधारे थे। जो महानता अनसूया में थी वही महानता बीजरूप में तुम्हारे अंदर भी छुपी है । हे भारत की नारी ! तू नारायणी है । तू तुच्छ नहीं है । पफ-पाउडर, लाली-लिपस्टिक और बॉयकट बालों से अपने को सजा-धजाकर भोगियों की कठपुतली बनने को तेरा अवतरण नहीं हुआ, तेरा जन्म नहीं हुआ । तू तो महान नारी है ! तुझमें नारायण का स्वरूप छिपा है। तू अपनी शान को फिर से बुलंद कर ! फिल्मों की, पाश्चात्य जगत के तुच्छ नाच-गान और फैशन की गुलाम मत हो वरन् अपनी महिमा को पहचान।

'मैं बहुत दीन-हीन हूँ, गरीब हूँ...' यह गिड़गिड़ाना छोड़ दे। विकट परिस्थिति में भी प्रसन्न रह। शबरी भीलन कितनी विकट परिस्थिति में रही ? मीरा ने क्या नहीं सहा ? संत रैदास कितने गरीब थे ? तुकाराम महाराज कितने गरीब थे ? लेकिन इनके चरणों में कैसे-कैसे लोगों ने अपना मस्तक रखकर भाग्य बनाया, यह मत भूलना । इसीलिए कभी भी अपने चित्त में दीन-हीन और दुर्बल विचारों को मत आने देना।

संसार और शरीर तो विघ्न-बाधाओं से भरा पड़ा है । उन विघ्न-बाधाओं से घबराकर पलायनवादी होना, भागते फिरना... **धोबी का कुत्ता, न घर का न घाट का** - ऐसा जीवन बिताना, तुच्छ तिनके की तरह भटकते फिरना... यह उज्ज्वल भविष्य की निशानी नहीं है एवं विकारों में डूबा हुआ जीवन भी उज्ज्वल भविष्य की निशानी नहीं है । विघ्न-बाधाओं से लड़ते-लड़ते अशांत होना भी ठीक नहीं बल्कि विघ्न-बाधाओं के बीच से रास्ता निकालकर अपने लक्ष्य तक की यात्रा कर मंजिल को पाना यह जरूरी है।

हे भारत के लाला-लालियो ! अपने जीवन में हजार-हजार विघ्न आयें, हजार बाधाएँ आ जायें लेकिन एक उत्तम लक्ष्य बनाकर चलते जाओ। देर-सवेर तुम्हारे लक्ष्य की सिद्धि होकर ही रहेगी। विघ्न और बाधाएँ तुम्हारी सुषुप्त चेतना को, सुषुप्त शक्तियों को जागृत करने के शुभ अवसर हैं।

कभी भी अपने को कोसो मत। हमेशा सफलता के विचार करो। प्रसन्नता के विचार करो। आरोग्य के विचार करो । दृढ़ एवं पुरुषार्थी बनो और भारत के श्रेष्ठ नागरिक बनकर भारत की शान बढ़ाओ। ईश्वर एवं ईश्वरप्राप्त महापुरुषों के आशीर्वाद तुम्हारे साथ हैं...

महापुरुषों का भारत को विश्वगुरु बनाने का सत्यसंकल्प श्री नरेन्द्र मोदी जैसे कर्मयोगियों से शीघ्र साकार होगा

हमारी भारतीय संस्कृति में माता-पिता और गुरुजनों को प्रणाम करके उनका आशीर्वाद लेना यह जीवन में सफलता की चाबी कही गयी है । भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण, भक्त पुंडलिक, श्रवण कुमार, छत्रपति शिवाजी, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, लाल बहादुर शास्त्री, संत श्री आशारामजी बापू... ऐसे अनेक संत, महापुरुष, भक्त एवं राजनेता हुए हैं जिन्होंने माता-पिता और गुरुजनों के आदर, वंदन एवं सेवा की पावन मिसाल कायम की।

वर्तमान में भी कुछ ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनका जीवन उपरोक्त संस्कारों से परिपूर्ण है । इसमें एक हैं श्री नरेन्द्र मोदी। वर्ष २०१४ के चुनावों में हासिल हुई जीत के बाद श्री नरेन्द्रभाई मोदी ने सबसे पहले अपनी ९६ वर्षीय माँ 'हीरा बा' के पास जाकर उनके पैर छुए और आशीर्वाद लिया । ऐसे संस्कृतिरक्षक महामानव भगवान व संतों-महापुरुषों की कृपा और करोड़ों-करोड़ों भक्तों-साधकों की शुभ-भावना एवं स्नेह प्राप्त कर लेते हैं।

हमारी भारतीय संस्कृति में घर, कार्यालय आदि को मंदिर माना जाता है। इसीलिए दुकानदार दुकान की दहलीज को प्रणाम करके अंदर प्रवेश करता है। इसी प्रकार श्री नरेन्द्र मोदी ने संसद भवन में चुनाव के बाद पहली बार प्रवेश करते समय संसद भवन की सीढ़ी को मत्था टेक के प्रणाम कर भारतीय संस्कृति की गरिमा को बढ़ाया है।

श्री नरेन्द्र मोदी जिज्ञासु साधक हैं । उन्होंने अनेक बार पूज्य बापूजी के दर्शन, सत्संग व सान्निध्य का लाभ लिया है। कुछ वर्ष पूर्व गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तरायण शिविर के अवसर पर पूज्य बापूजी के दर्शन-सत्संग का लाभ लिया तथा शुभाशीष पाये थे। उन्होंने कहा था : ''मैं पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में प्रणाम करने आया हूँ। मैं मानता हूँ कि भक्ति से बड़ी दुनिया में कोई ताकत नहीं होती और भक्त हर कोई बन सकता है। हम सबको भक्त बनने की ताकत मिले, आशीर्वाद मिलें। मैं समझता हूँ कि संतों के आशीर्वाद ही हम सबकी बड़ी पूँजी होती है।''

साबर-तट पर उपस्थित लाखों शिविरार्थियों के विशाल सैलाब की ओर इशारा करते हुए श्री नरेन्द्रभाई ने कहा था : ''देशभर से आये हुए आप सबको, एक लघु भारत के रूप में मैं अपने सामने देख रहा हूँ। इस पवित्र धरती पर आये हुए आप सभीको मैं नमन करता हूँ। मन बार-बार नमन करता है, वंदन करता है, प्रणाम करता है इस महान ऋषि-परम्परा को। पूज्य बापूजी के चरणों में वंदन...''

बड़ौदा के सत्संग समारोह में पधारे श्री नरेन्द्रभाई ने कहा था : ''पूज्य बापूजी !

आप देश और दुनिया - सर्वत्र ऋषि-परम्परा की संस्कार-धरोहर को पहुँचाने के लिए अथक तपश्चर्या कर रहे हैं। अनेक युगों से चलते आये मानव-कल्याण के इस तपश्चर्या-यज्ञ में आप अपने पल-पल की आहुति देते रहे हैं। उसमें से जो संस्कार की दिव्य ज्योति प्रकट हुई है, उसके प्रकाश में मैं और जनता - सब चलते रहें। मैं संतों के आशीर्वाद से ही जी रहा हूँ। मैं यहाँ इसलिए आया हूँ कि लाइसेंस रिन्यू हो जाय। पूज्य बापूजी ने आशीर्वाद दिया और आप सबको वंदन करने का मौका दिया, इसलिए मैं बापूजी का ऋणी हूँ।''

कुछ साल पहले बापूजी ने नरेन्द्रभाई मोदी को शुभाशीष प्रदान करते हुए कहा था कि ''हम आपको देश के प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहते हैं।''

बापूजी के संकल्प में करोड़ों साधकों-भक्तों का संकल्प भी जुड़ गया। साधकों ने अनेक स्थानों पर मतदाता जागृति रैलियाँ भी निकालीं एवं देश में परिवर्तन लाकर एक मजबूत, सक्षम सरकार प्रदान कराने में अपना योगदान दिया।

'ऋषि प्रसाद' पत्रिका द्वारा विशेषांकों के माध्यम से देशव्यापी संकल्प कराया गया था कि भारत की राजधानी में राष्ट्रीय नेता के रूप में श्री नरेन्द्रभाई मोदी आगे आयें और यशस्वी हों। वह संकल्प भी साकार हुआ है।

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ राजनेताओं ने समय-समय पर पूज्य बापूजी के सत्संग-दर्शन का लाभ लिया है तथा सुशासन की प्रेरणा प्राप्त की। बापूजी के प्रति आपके उद्गार हैं :

''मैं यहाँ पर पूज्य बापूजी का अभिनंदन करने आया हूँ, उनका आशीर्वचन सुनने आया हूँ... पूज्य बापूजी सारे देश में भ्रमण करके जागरण का शंखनाद कर रहे हैं, सर्वधर्म-समभाव की शिक्षा दे रहे हैं, संस्कार दे रहे हैं तथा अच्छे और बुरे में भेद करना सिखा रहे हैं।

हमारी जो प्राचीन धरोहर थी और जिसे हम लगभग भूलने का पाप कर बैठे थे, बापूजी हमारी आँखों में ज्ञान का अंजन लगाकर उसको फिर से हमारे सामने रख रहे हैं।

बापूजी का प्रवचन सुनकर बड़ा बल मिला है। उनका आशीर्वाद हमें मिलता रहे, उनके आशीर्वाद से प्रेरणा पाकर बल प्राप्त करके हम कर्तव्य के पथ पर निरंतर चलते हुए परम वैभव को प्राप्त करें, यही प्रभु से प्रार्थना है।

१३ दिन के शासनकाल के बाद मैंने कहा : 'मेरा जो कुछ है, तेरा है।' यह तो बापूजी की कृपा है कि श्रोता को वक्ता बना दिया और वक्ता को नीचे से ऊपर चढ़ा दिया। जहाँ तक ऊपर चढ़ाया है वहाँ तक ऊपर बना रहूँ, इसकी चिंता भी बापूजी को करनी पड़ेगी।''

– श्री अटल बिहारी वाजपेयी, तत्कालीन प्रधानमंत्री

यह बात जगजाहिर है कि इसके बाद श्री अटल बिहारी वाजपेयी पहले १३ महीने और फिर साढ़े ४ साल तक प्रधानमंत्री पद पर रहे।

''मैं जानता हूँ इस सच्चाई को, चाहे इस भारत का कोई मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री क्यों न हो, पूरी पार्टी के द्वारा यदि उनकी कोई सार्वजनिक सभा आयोजित करनी हो, तब भी इतना बड़ा जनसमूह इकट्ठा नहीं किया जा सकता जितना बड़ा जनसमूह आज परम पूज्य बापूजी के दर्शन के लिए यहाँ पर अपनी आँखों के सामने देख रहा हूँ। सुबह ७ बजे से

दोपहर १२.३० तक इतनी भीड़ जुटी रहे ऐसा किसी भी मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री की सभा में नहीं हो सकता, जो मैं यहाँ देख रहा हूँ।

हमारे सबके आस्था व विश्वास के केन्द्र परम पूज्य बापूजी के देशभर में तथा दुनिया के दूसरे देशों में जो प्रवचन चलते हैं, उनके द्वारा अध्यात्म की प्रेरणा हम सबको मिलती रहती है। मैं पुनः उनके चरणों में शीश झुकाकर उन्हें हृदय की गहराइयों से प्रणाम करता हूँ।''

– श्री राजनाथ सिंह, भाजपा के वरिष्ठ सांसद, शीर्ष नेता व राष्ट्रीय अध्यक्ष

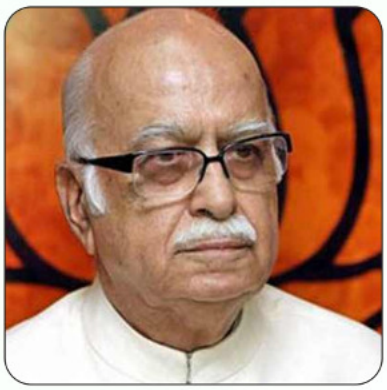

पूज्य बापूजी द्वारा दिया जानेवाला नैतिकता का संदेश देश के कोने-कोने में जितना अधिक प्रसारित होगा, जितना अधिक बढ़ेगा, उतनी ही मात्रा में राष्ट्रसुख का संवर्धन होगा, राष्ट्र की प्रगति होगी। जीवन के हर क्षेत्र में इस प्रकार के संदेश की जरूरत है।''

– श्री लालकृष्ण आडवाणी पूर्व उपप्रधानमंत्री व केन्द्रीय गृहमंत्री, भारत सरकार

''जगत के हित और प्यारों के कल्याण के लिए जिन्होंने यह देह धारण किया है, हम सबके भगवान बापूजी के चरणों में मैं प्रणाम करता हूँ। हम तो आपके भक्त हैं, शिष्य हैं। आपने जो कुछ बातें कही हैं, हम उनका पालन करेंगे।''

– श्री शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

''महाराज पूज्य बापूजी ! आपका आशीर्वाद बना रहे क्योंकि मैं राज करने नहीं आयी, धर्म और कर्म को एक साथ जोड़कर मैं सेवा करने के लिए आयी हूँ और वह मैं करती रहूँगी। आप रास्ता बताते रहो और इस राज्यरूपी परिवार की सेवा करने की शक्ति देते रहो।

मैं मानती हूँ कि जब गुरु के साक्षात् दर्शन हो गये हैं तो कुछ बदलाव जरूर आयेगा, राज्य की समस्याएँ हल होंगी व हमलोग जनसेवा के काम कर सकेंगे।''

– वसुंधरा राजे सिंधिया ,मुख्यमंत्री, राजस्थान

बापूजी कितने प्रेमदाता हैं कि कोई भी व्यक्ति समाज में दुःखी न रहे इसलिए सतत प्रयत्न करते रहते हैं। जीवन की सच्ची शिक्षा तो हम भी नहीं दे पा रहे हैं, ऐसी शिक्षा तो पूज्य संत श्री आशारामजी बापू जैसे संतशिरोमणि ही दे सकते हैं।''

– श्रीमती आनंदीबहन पटेल तत्कालीन शिक्षामंत्री, वर्तमान मुख्यमंत्री, गुजरात

''हम सबका परम सौभाग्य है कि बापूजी के दर्शन हुए। आपसे मुलाकात हुई, आशीर्वाद मिला, मार्गदर्शन भी मिला और इशारों-इशारों में आपने वह सब कुछ जो सद्गुरुदेव एक शिष्य को बता सकते हैं, मेरे जैसे एक शिष्य को आशीर्वादरूप में प्रदान

किया । आपके आशीर्वाद व कृपादृष्टि से छत्तीसगढ़ में सुख-शांति व समृद्धि रहे। यहाँ के एक-एक व्यक्ति के घर में विकास की किरण आये।

आपने जो ज्ञानोपदेश दिया है, हम सभीका कर्तव्य होगा कि उस रास्ते पर चलें। बापूजी ने खासतौर से पीपल, नीम, आँवला व तुलसी के वृक्ष लगाने के बारे में कहा है। हम इस पर विशेष रूप से ध्यान देंगे।''

– डॉ. रमण सिंह , मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

''श्रद्धेय पूज्य बापूजी ने मुझे आशीर्वाद दिया है । उनके आशीर्वाद से मुझे समाज में अच्छा कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

करोड़ों लोगों को जीवन जीने का मार्ग आपके विचारों से मिलता है। संस्कार और शिक्षा के माध्यम से आपने यह जो लोकप्रबोधन किया है, इससे हमारे देश में और समाज में अच्छे नागरिक तैयार होंगे जो देश और समाज का गौरव बढ़ाते जायेंगे। आपका सत्संग हमारे जैसे अनेक छोटे-मोटे लोगों को समाज के लिए काम करने की प्रेरणा देगा और हमको जीवन की दिशा दिखायेगा। सत्संग में आने का अवसर मिला, ऐसे महान संत का सत्संग-वचन, आशीर्वाद मिला, मैं बहुत भाग्यशाली हूँ।''

– श्री नितिन गडकरी

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी

पूज्य बापूजी जैसे संतों का प्रेम व आशीर्वाद कभी देश, जाति और सम्प्रदाय की सीमाओं में नहीं बँधता । कलियुग में हृदय की निष्कपटता, निःस्वार्थ प्रेम, त्याग और तपस्या का क्षय होने लगा है, फिर भी धरती टिकी है तो बापूजी ! इसलिए कि आप जैसे संत भारतभूमि पर विचरण करते हैं । बापूजी की कथा में ही मैंने यह विशेषता देखी है कि गरीब और अमीर, दोनों को अमृत के घूँट एक जैसे पीने को मिलते हैं। यहाँ कोई भेदभाव नहीं है।''

– सुश्री उमा भारती, सांसद

पूर्व भाजपा उपाध्यक्ष, पूर्व मुख्यमंत्री, म.प्र.

परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू विद्यार्थियों के लिए देश के कोने-कोने में आयोजित होनेवाले विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविरों में दुर्लभ एवं विस्मृत यौगिक क्रियाओं एवं अपने शुभ संकल्पों तथा प्रेरणादायी अनुभवसम्पन्न वचनों द्वारा उनमें आध्यात्मिक चेतना का संचारकर भारतीय संस्कृति से अनुप्राणित सुसंस्कारों का वपन व सिंचन करते हैं।''

– माननीय डॉ. मुरली मनोहर जोशी सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय मानव संसाधन एवं विकास मंत्री, भारत सरकार

श्री नरेन्द्रभाई मोदी और इनके सभी साथी देश का नाम बुलंदियों पर ले जायें, भारत में वैदिक संस्कृति का प्रकाश फैलायें। पूज्य बापूजी एवं महापुरुषों का भारत को विश्वगुरु बनाने का सत्यसंकल्प शीघ्र साकार हो।

(श्री आर.सी. मिश्र)

कहीं हम भी प्यासे न मर जायें !

एक व्यक्ति मरुभूमि में भटक गया। भटकते हुए ८ दिन गुजर गये। न तो कुछ खाने को मिला और न पीने के लिए पानी। अब तो जान निकलने लगी, एक-एक कदम चलना मुश्किल हो गया। तभी वहाँ से कुछ दूरी पर उसे कुछ हरियाली और कुएँ जैसा दिखायी दिया। मरता क्या न करता, हिम्मत करके गिरते-पड़ते वहाँ पहुँच गया।

कुएँ के पास उसे रस्सी और बाल्टी भी मिल गयी। उसने बाल्टी से पानी खींचना शुरू कर दिया पर जब बाल्टी ऊपर आयी तो उसमें पानी आया ही नहीं। उसने फिर से प्रयास किया पर पानी हाथ न लगा। ऐसा करते-करते जब छठी बार बाल्टी कुएँ में डाली तो बाल्टी ऊपर आये उससे पहले ही उसका दम उखड़ने लगा, वह चक्कर खाकर गिरा और प्यासा ही मर गया।

वह व्यक्ति इतनी लम्बी यात्रा करके कुएँ तक पहुँचा, बाल्टी और रस्सी भी मिली और पानी निकालने की उसने खूब कोशिश भी की परंतु वह प्यासा ही रह गया और मर गया, क्यों ? क्योंकि उस बाल्टी में छिद्र थे और उसने उन्हें बंद नहीं किया। उस व्यक्ति की लापरवाही व नासमझी ने उसकी सारी मेहनत विफल कर डाली और उसे काल का ग्रास बना दिया।

हम लोग भी चौरासी लाख योनियों की लम्बी यात्रा तय करके मनुष्य बने हैं। परमात्मा ने कृपा करके हमें नर-तनरूपी बाल्टी भी प्रदान की है और परमात्म-रस से छलाछल भरे सत्संगरूपी कुएँ तक भी पहुँचा दिया है। लेकिन मनुष्य-देह में जो विकार, मनमुखता और निगुरापन है, उन्हें बंद करने की ओर हम ध्यान नहीं देते जिससे हमारी ऊर्जारूपी पानी निरंतर बहता चला जा रहा है।

उस व्यक्ति के पास तो बाल्टी के छिद्रों को बतानेवाला कोई हितैषी नहीं था परंतु हमें तो सद्गुरुरूपी परम हितैषी भी मिले हैं जो इन छिद्रों को बताते हैं और उन्हें कैसे बंद किया जाय वह युक्ति भी बताते हैं। उनसे प्राप्त ध्यानामृत, ज्ञानामृत के स्वाद से कइयों का जीवन स्वस्थ हो रहा है।

अतः हमें सावधान होना होगा। कहीं ऐसा न हो कि उस व्यक्ति की तरह प्रयास करने के बावजूद भी हम परमात्मप्राप्तिरूपी रस को पाये बिना प्यासे ही संसार से विदा हो जायें।

पूज्य बापूजी साधकों को सावधान करते हुए कहते हैं : ''इतने सत्संग का श्रवण, ध्यान आदि करते हो तो अब मोह-ममता से ऊपर उठते जाओ। जल्दी से परमात्म-वैभव व परमात्म-ज्ञान को पाओ और बढ़ाओ।''

(मुखपृष्ठ २ से 'अद्भुत है भारत का अनसुना वैज्ञानिक और सांस्कृतिक इतिहास !' का शेष)

भारत द्वारा विश्व को दी गयीं अनमोल खोजें गणित के क्षेत्र में...

✻ **बोधायन ऋषि** ने सबसे पहले उस प्रमेय को समझाया था, जिसे आज हम 'पाइथागोरस प्रमेय' के नाम से जानते हैं।

✻ शून्य व बायनरी प्रणाली **आर्यभट्ट** की खोज थी।

'नासा' के वैज्ञानिक डॉ. ब्रिग्स कहते हैं : 'हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि गणित में शून्य का अंक भी भारतीय विचारकों की देन है तथा बायनरी प्रणाली, जिसका अभी कम्प्यूटर में उपयोग होता है, वह भी भारत की ही खोज है।'

✻ १०० ई.पू. में भारत ने गणित के स्थानीय-मूल्य (value system) और दशमलव प्रणाली विकसित कर ली थी। तभी तो विश्व के महान भौतिक वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टीन ने कहा है : 'हम भारतीयों के अत्यंत ऋणी हैं कि उन्होंने हमें गिनती करना सिखाया, जिसके बिना कोई भी महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक खोज नहीं की जा सकती।'

✻ गणित के त्रिकोणमिति (ट्रिगनोमैटरी) और बीजगणित (अल्जेबरा) विषय विश्व को भारत की देन हैं। 'कैल्कुलस्' की खोज न्यूटन से कई वर्ष पहले १४वीं सदी में केरल के विद्वानों और गणितज्ञों द्वारा की गयी थी।

✻ ११वीं सदी में **श्रीधराचार्य** ने बीजगणित के अनेक महत्त्वपूर्ण आविष्कार किये। वर्गात्मक समीकरण (Quadratic Equations) को हल करने का नियम आज भी 'श्रीधर नियम' अथवा 'हिन्दू नियम' के नाम से प्रचलित है। इनके ग्रंथों में अंकगणित और क्षेत्र-व्यवहार का विशेष विवरण है।

✻ **श्रीनिवास रामानुजन्** भारत के विश्वप्रसिद्ध गणितज्ञ थे, जिनके द्वारा बनाये गणित के एक-एक नमूने को हल करने में विश्व के बड़े-बड़े गणितज्ञों को कई वर्ष लग गये।

विज्ञान व तकनीकी क्षेत्र में...

✻ **महर्षि कणाद** ने आधुनिक विज्ञानी डाल्टन से हजारों वर्ष पूर्व परमाणु की अवधारणा व वैशेषिक दर्शन का आविष्कार किया था।

✻ **ऋषि भारद्वाज** वैदिककालीन विमान-विद्या के प्रणेता हैं। उनके ग्रंथ 'वैमानिक प्रकरणम्' में विमान-विद्या का विस्तृत उल्लेख पाया जाता है। हाल ही में पुरातन हस्तलिखित लिपि के अनुसंधानकर्ता और पुरालेखवेत्ता गणेश नेरलेकर देसाई ने पाया कि 'ऋषि भारद्वाज के इस ग्रंथ के आधार पर ही राइट ब्रदर्स से १० वर्ष पूर्व ही मुंबई के शिवकर तलपड़े ने पहला विमान उड़ाया था।'

✻ **भास्कराचार्य** ने न्यूटन से पूर्व गुरुत्वाकर्षण नियम खोजा था।

✻ **डॉ. होमी भाभा** ने परमाणुशक्ति के क्षेत्र में कई महत्त्वपूर्ण खोजें कीं।

✻ अमेरिका के IEEE नामक संगठन ने एक शताब्दी पुराना संशय दूर करते हुए सिद्ध किया है कि बेतार (वायरलेस) संचार के पथप्रदर्शक मारकोनी नहीं बल्कि प्रोफेसर **जगदीशचन्द्र बसु** थे। अतः रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल फोन आदि की खोज के मूल में भी जगदीशचन्द्र बसु ही हैं। बसु भौतिकी, जीव, वनस्पति तथा पुरातत्त्व विज्ञान के विशेषज्ञ और क्रेस्कोग्राफ के सर्वप्रथम आविष्कारकर्ता थे। रेडियो और सूक्ष्म तरंगों की प्रकाशिकी पर कार्य करनेवाले वे पहले वैज्ञानिक थे।

विश्व के सर्वप्रथम विश्वविद्यालय : 'तक्षशिला' व 'नालंदा'

दुनिया का सबसे पहला विश्वविद्यालय **तक्षशिला** ७०० ई.पू. भारत में स्थापित किया गया था, जिसमें विश्वभर के १०५०० से ज्यादा विद्यार्थी ६० से अधिक विषय पढ़ते थे। ५वीं शताब्दी में हूणों

ने भारत पर ध्वंसक आक्रमण किये, उनमें तक्षशिला नगर भी ध्वस्त हो गया।

शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन भारत की सबसे ऊँची उपलब्धि **नालंदा** विश्वविद्यालय की स्थापना ५वीं शताब्दी में बिहार में हुई थी। इस विश्वविद्यालय को १२वीं शताब्दी में तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने जलाकर नष्ट कर दिया था।

दोनों ही विश्वविद्यालयों का विनाश तथा शिक्षा के मंदिरों, मठों व गुरुकुलों का विनाश खगोल विज्ञान, गणित, रसायन विद्या, शरीर-रचना आदि विज्ञान के क्षेत्र में भारत की महान खोजों को लुप्त करने के उद्देश्य से किया गया था।

आयुर्वेद व शल्य-चिकित्सा के क्षेत्र में...

आयुर्वेद मनुष्य की जानकारी में सबसे प्राचीन चिकित्सा प्रणाली है, जो स्वयं **धन्वंतरि देव** की देन है और **आचार्य चरक** इसके महान चिकित्साशास्त्री और 'चरक संहिता' के रचनाकार रहे । शल्य-चिकित्सा के प्रवर्तक (Father of Surgery) **महर्षि सुश्रुत** हैं। आज से २६०० वर्ष पहले महर्षि सुश्रुत और भारत के अन्य स्वास्थ्य वैज्ञानिकों ने शल्य-प्रसव, मोतियाबिंद, अस्थिभंग (हड्डियों की टूट-फूट) और मूत्राशय-पथरी आदि की शल्य-चिकित्साएँ की थीं।

औद्योगिक, खेल व अन्य क्षेत्रों में...

✻ नौ-परिवहन (Navigation) की कला का जन्म ५००० वर्ष पहले सिंध प्रांत में हुआ था । **अंग्रेजी शब्द 'नेवीगेशन' संस्कृत शब्द 'नवगतिः' से बना है।**

'जेमोलोजिकल इन्सटीट्यूट ऑफ अमेरिका' के अनुसार १८९६ तक विश्व को हीरे देनेवाला एकमात्र देश भारत था।

✻ दुनिया में सिंचाई के लिए सबसे पहला जलाशय व बाँध सौराष्ट्र (गुजरात) में बनाया गया था।

✻ विश्वप्रसिद्ध दिमागी खेल 'शतरंज' की खोज भारत में हुई थी।

भाषा व खगोल शास्त्र में...

लेटीन भाषा के जरिये संस्कृत को सभी यूरोपियन भाषाओं की जननी माना जाता है । सन् १९८७ में छपी फोर्ब्स पत्रिका के अनुसार **'संस्कृत भाषा कम्प्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा है।'**

आज के खगोल-शास्त्रियों से सैकड़ों वर्ष पहले ५वीं शताब्दी में **भास्कराचार्य** ने सौर-वर्ष को ३६५.२५८७५६८४ दिनों का बताया था।

योग व अध्यात्म जगत का सदैव सिरमौर : भारत

✻ समस्त विश्व के उद्धार में सक्षम वेद, पुराण, उपनिषद्, रामायण, श्रीमद्भागवत, श्रीमद् भगवद्गीता आदि सद्ग्रंथ भारत के संत-महापुरुषों की ही देन हैं।

✻ भारत में मानवता का सबसे बड़ा जमावड़ा कुम्भ मेले के रूप में आयोजित होता है।

✻ अनादिकाल से पूरा विश्व भारत के अध्यात्म व योग विद्या से शांति व आनंद पाता चला आया है। साथ ही स्वामी विवेकानंदजी, स्वामी रामतीर्थजी, परमहंस योगानंद, स्वामी राम, साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज जैसे ब्रह्मज्ञानी संतों ने विदेशों में जाकर असंख्य लोगों को भारत के महान वैदिक दर्शनशास्त्र का परिचय कराया और आध्यात्मिकता, ध्यान-योग, शाकाहार आदि की महत्ता बताकर उनका नजरिया बदल दिया।

वर्तमान समय में भी ब्रह्मनिष्ठ पूज्य संत श्री आशारामजी बापू ने 'विश्व धर्म संसद' में भारत का प्रतिनिधित्व करके हमारी महान संस्कृति व अध्यात्म का डंका बजाया था । आज देश-विदेश के करोड़ों लोग बापूजी के सत्संग-प्रवचनों द्वारा भारतीय संस्कृति को अपनाकर अपनी आत्म-महिमा पहचान के इस अशांत, कलहभरे युग में भी सुख-शांति का अनुभव कर रहे हैं, लौकिक व अध्यात्म जगत में

उन्नत हो रहे हैं।

उपरोक्त तथ्य भारतीय संस्कृति के महान इतिहास की एक झलकमात्र हैं। भारतीय संस्कृति इतनी गौरवमयी है कि इसे जानने के बाद हमारा आत्मविश्वास बुलंदियों पर पहुँच जाता है कि हम उन महापुरुषों की संतान हैं जिन्होंने विश्व को सजाया-सँवारा है, हम भी सब कुछ कर सकते हैं। लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज विद्यालयों-महाविद्यालयों में मैकाले पद्धति से पढ़ाये जानेवाले झूठे इतिहास में भारत की खोजों को उपेक्षित किया जाता है, भारतीय संस्कृति व संतों की महिमा से भारतवासियों को अनभिज्ञ रखा जाता है। परंतु जब तक पूज्य बापूजी जैसे ब्रह्मज्ञानी संत इस भारतभूमि पर अवतरित होते रहेंगे, तब तक भारत व उसकी संस्कृति की महिमा पुनः-पुनः उजागर होती रहेगी। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि लाखों हिन्दू जो प्रलोभन अथवा विदेशी चकाचौंध से प्रभावित होकर भारतीय संस्कृति के लाभ से वंचित हो रहे थे, वे पुनः सहयोग और शिक्षा-दीक्षा से स्वस्थ, सहायक, स्नेही और सुखद जीवन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। बापूजी की प्रेरणा से 'वेलेंटाइन डे' की जगह 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाया जाना आदि कई विश्वमांगल्यकारी परम्पराओं की शुरुआत हुई। इनके द्वारा पूज्यश्री बाल व युवा पीढ़ी में लुप्त हो रहे भारतीय संस्कारों को पुनः जागृत करके भारत को विश्वगुरु पद की ओर लिये जा रहे हैं।

फास्टफूड से याददाश्त होती है कमजोर

फास्टफूड/जंक फूड (बर्गर, पिज्जा आदि) से पेट की खराबी व अन्य शारीरिक बीमारियाँ तो होती ही हैं साथ ही याददाश्त भी कमजोर होती है।

हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के 'न्यू साउथ वेल्स विश्वविद्यालय' के शोधकर्ताओं ने पाया कि 'फास्टफूड से न केवल चर्बी बढ़ती है बल्कि याददाश्त पर भी बुरा असर पड़ता है।' एक शोध में चूहों को एक सप्ताह तक जंक फूड खिलाया गया। इस प्रकार का आहार देने पर उनके दिमाग के हिप्पोकैम्पस क्षेत्र (दिमाग का वह भाग जो स्मृति निर्माण एवं संचय का कार्य करता है) में सूजन देखी गयी।

शोधकर्ता मार्गेरेट मोरिस के अनुसार ''अक्सर हम अधिक जंक फूड खाने से मोटापा तो महसूस करते हैं परंतु दिमाग में होनेवाले बदलाव को महसूस नहीं कर पाते। ऐसे में इस शोध के परिणाम चौंकानेवाले हैं।''

फास्टफूड को ज्यादा दिन तक रखने के लिए उनमें भारी मात्रा में 'प्रिजर्वेटिव' डाले जाते हैं, जो कि स्वास्थ्य के लिए अति हानिकारक हैं। हाल ही में 'मैकडोनल्ड' नामक फास्टफूड बनानेवाली कम्पनी ने अपनी वेबसाइट पर अपने ही कर्मचारियों को फास्टफूड खाने से परहेज करने को कहा है तथा उच्च रक्तचाप, मधुमेह (डायबिटीज) और हृदयरोगियों को विशेष रूप से सावधान रहने को कहा। गौरतलब है कि इन कम्पनियों द्वारा उपभोक्ताओं को ऐसी कोई चेतावनी नहीं दी जाती और लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ होता है। अतः फास्टफूड खाने से स्वयं बचें और बच्चों को भी इनसे दूर रखें। स्वस्थ जीवन के लिए जरूरी है कि हम भारतीय संस्कृति और संतों के बताये अनुसार अपना खान-पान एवं दिनचर्या बनायें।

सच्चे मन से सेवा, देती ईश्वरकृपा का मेवा

गाँव में प्लेग का भयानक रोग फैला था, रोज १-२ लोग मर रहे थे । सुंदरदास कई बार श्मशान जा-जाकर भयभीत हो सोचने लगे कि 'गाँव छोड़कर शहर चले जायें तो ठीक, न जाने कल क्या हो जाय ?' उन्होंने झटपट सामान बाँधकर शहर जाने की तैयारी कर ली पर उनके बालक मलूक का तो कोई अता-पता ही नहीं था । चिंतातुर हो वे बेटे को खोजने निकल पड़े । काफी देर बाद पता चला कि बेटा घीसू चमार के घर उसकी पत्नी की सेवा में लगा है । घीसू कहीं दवा लेने गया है और नन्हा बालक घर पर अकेली बुखार में तप रही उसकी पत्नी के माथे पर ठंडे पानी की पट्टी रख रहा है ।

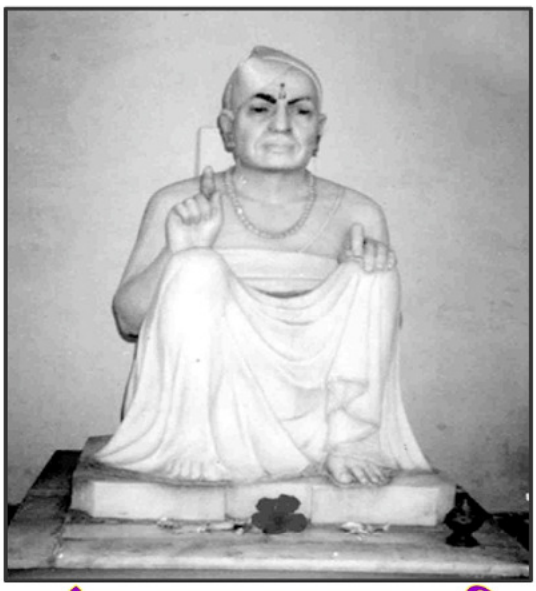

संत मलूकदासजी

पिता ने वहाँ पहुँचकर डाँटा : ''इस भयंकर रोग का खतरा तुम क्यों मोल ले रहे हो ?'' पर बालक का हृदय परदुःखकातरता के भाव से सराबोर था । मलूक ने आग्रह किया : ''इस विपत्ति के समय में मैं इन माताजी को अकेले नहीं छोड़ सकता ।'' बालक अपनी सेवा पूरी करके घर लौटा ।

उसने देखा कि पिताजी गाँव छोड़ने की तैयारी में हैं । मलूक चुपचाप पूजा के स्थान पर जाकर सच्चे हृदय से भगवान से प्रार्थना करने लगा कि 'हे प्रभु ! अब आप ही गाँव की प्लेग से रक्षा कर सकते हैं । हे दयामय ! कृपा करो नाथ ! हम गाँववाले अब आपकी शरण हैं...' भगवान को पुकारते-पुकारते वह शांत हो गया ।

थोड़ी देर बाद बाहर आकर उसने पिता से कहा : ''पिताजी ! भगवान ने मेरी प्रार्थना सुन ली है । अब प्लेग का प्रकोप अवश्य घटने लगेगा । हमें कहीं भी जाने की आवश्यकता नहीं है ।''

बेटे को डाँटने की ताक में बैठे पिता यह बात सुनकर और क्रोधित हो गये । तब मलूक विनम्रतापूर्वक बोला : ''पिताजी ! यह समय गाँव के लोगों की सहायता करने का है, उन्हें विपत्ति में छोड़कर जाने का नहीं है । यदि हमें इस दशा में छोड़कर गाँववाले चले जायें तो आपको कैसा लगेगा ? आप दो दिन और रुक जाइये । महामारी न रुके तो चले जायेंगे ।''

सत्संगी बेटे की सत्य से सराबोर वाणी से और परहितपरायणता से सुंदरदास का मन द्रवीभूत हो गया और मलूक का भावपूर्ण आग्रह उन्होंने स्वीकार कर लिया ।

उस दिन के बाद प्लेग से मौत का सिलसिला रुक गया और धीरे-धीरे गाँव में स्वास्थ्य, सुख-शांति पुनः लौट आयी ।

बचपन के परदुःखकातरता व सेवा के गुण ने आगे चलकर मलूक का द्वैत भ्रम मिटा दिया और **वासुदेवः सर्वम्...** की दिव्य दृष्टि उन्हें सहज में ही प्राप्त हुई । मलूक आगे चलकर संत मलूकदासजी के नाम से विख्यात हुए । आज भी जगन्नाथ मंदिर के निकट उनकी समाधि है । उनका प्रसिद्ध दोहा है -

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम ।
दास मलूका यूँ कहे, सबका दाता राम ॥

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''जिसका सेवारूपी कर्मयोग सफल हो गया, भक्ति तो उसके घर की ही चीज है, ज्ञान तो उसका स्वभाव हो गया, देह का तो अभिमान ही चला गया ।''

महापुरुषों का दिव्य प्रभाव

एक बार आद्य शंकराचार्यजी वेदपारंगत श्री गोविंद भगवत्पादजी से मिलने के लिए बद्रीनाथ की ओर रवाना हुए। ग्रीष्म ऋतु की भरी दोपहर में जब वे पहाड़ी यात्रा से थक गये तो रास्ते में एक सरोवर के किनारे बैठकर विश्राम करने लगे । अचानक उनकी नजर जल में तैरते हुए कुछ मेंढकों पर पड़ी जो आपस में खेल रहे थे। इतने में एक छोटे-से मेंढक की 'टर्र... टर्र...' ध्वनि जोर से सुनाई दी। जल की असह्य गर्मी उससे बर्दाश्त नहीं हो रही थी, जिससे वह बुरी तरह से चीख रहा था । आखिरकार वह जल से बाहर निकलकर किनारे पर बैठ गया।

थोड़ी ही देर में मेंढक का क्रंदन सुनकर एक काला नाग उसके समीप पहुँच गया । यह देख वह मेंढक अति घबराकर नाग की ओर देखने लगा । लेकिन यह क्या ! सर्प ने उसे खाया नहीं बल्कि उसके सिर पर अपना फन फैलाकर खड़ा हो गया।

यह देख शंकराचार्यजी आश्चर्यचकित हो गये कि 'यह तो एक अनहोनी-सी बात हो गयी ! भक्षक ही रक्षक बन गया !' शंकराचार्यजी जब गोविंद भगवत्पादजी से मिले तो उन्होंने यह अनोखी घटना उन्हें सुनायी। इस पर स्वामीजी बोले : ''आपने यह दृश्य जहाँ देखा था उस स्थान पर पूर्व काल में महर्षि शृंगी का आश्रम था । वहाँ सभी जीव वैर-भाव भूलकर आपस में स्नेह, सहानुभूति से रहते थे। यह घटना भी उन्हीं महापुरुष के दिव्य स्पंदनों के प्रभाव से हुई है।''

प्राणिमात्र में अपने-आपका अनुभव करनेवाले ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों के चरण जहाँ पड़ते हैं, वहाँ की भूमि तीर्थत्व को प्राप्त हो जाती है। हजारों वर्ष बीत जाने पर भी महापुरुषों के दिव्य स्पंदनों के प्रभाव से उस स्थान पर जानेवाले जीवों को अलौकिक शांति व आनंद की अनुभूति होती है।

पूज्य बापूजी के पावन सत्संग-सान्निध्य के स्पंदनों से सुस्पंदित विभिन्न आश्रमों में आनेवाले लोगों को भी ऐसी ही अलौकिक सुख-शांति का अनुभव प्राप्त होता रहता है।

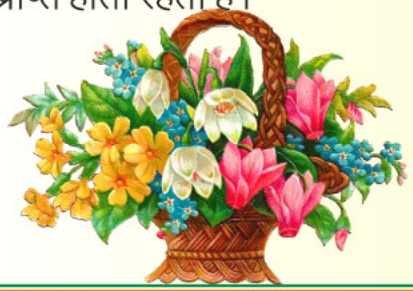

श्री भगवान बताते हैं : कैसा हो शिष्य का मनोभाव ?

शिष्य का अपने गुरु के प्रति कैसा भाव होना चाहिए यह बताते हुए भगवान श्रीकृष्ण उद्धवजी से कहते हैं कि ''मैं ही गुरुभक्तिस्वरूप बनकर रहूँगा। अपनी दूसरी स्थिति होने ही नहीं दूँगा। सद्गुरु जहाँ खड़े रहेंगे वहाँ उनके पैरों के नीचे की जमीन और जहाँ-जहाँ चलते जायेंगे उस मार्ग की मिट्टी भी मैं ही बनूँगा । उनके चरण धोने का पानी और चरण धोनेवाला तथा उनके चरणों के तीर्थ का सेवन करनेवाला भी मैं ही बनूँगा । सद्गुरु के चरणों की धूल मैं स्वयं बनूँगा। सद्गुरु जिस पर बैठते हैं, वह सिंहासन तथा उस पर रखा जानेवाला आसन भी मैं ही बनूँगा । गुरु को टेकने के लिए आगे-पीछे रखे जानेवाले तकिये, यहाँ तक कि सद्गुरु की सिद्ध पादुकाएँ भी मैं ही बनूँगा।''

(श्री एकनाथी भागवत, अध्याय : १२)

घर में खुशहाली व बरकत के लिए करें ये उपाय

✻ घर में फर्श, दीवार या छत पर दरार न पड़ने दें । अगर ऐसा हो तो उन्हें तुरंत भरवा दें । घर में दरारों का होना अशुभ माना जाता है।

✻ घर में क्रोध, कलह और रोना-धोना आर्थिक समृद्धि व ऐश्वर्य का मार्ग बाधित कर देता है । रामायण में संत तुलसीदासजी ने भी कहा है :

जहाँ सुमति तहँ संपति नाना।
जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना॥

(श्री रामचरित. सु.कां. : ३९.३)

इसलिए घर में कलह-क्लेश पैदा न होने दें । भगवन्नाम का जप करें, सात्त्विक भोजन करें, ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों का सत्संग सुनें, उनके द्वारा बतायी युक्तियों को अपनाकर जीवन खुशहाल करें। (गीता, रामायण, ऋषि प्रसाद पत्रिका पढ़ें तथा ऋषि दर्शन डीवीडी देखें, सुनें।)

✻ रात्रि में दही और सत्तू का सेवन करने से लक्ष्मी का निरादर होता है और बुद्धि भी कमजोर होती है। अतः आर्थिक समृद्धि और अपनी बुद्धि की सुरक्षा चाहनेवालों को इनका सेवन रात्रि में नहीं करना चाहिए।

✻ किसी कार्य की सिद्धि के लिए जाते समय घर से निकलने से पूर्व ही अपने हाथ में रोटी ले लें। मार्ग में जहाँ भी गाय दिखे उसे खिला दें। इससे सफलता प्राप्त होती है।

भारत का सबसे बड़ा समाचार पत्र समूह
दैनिक भास्कर
राजस्थान
dainikbhaskar.com

दुष्कर्म के झूठे केस बने रुपये ऐंठने के साधन

दैनिक भास्कर व नवभारत, जयपुर । आज महिला सुरक्षा के लिए बने कानूनों का दुरुपयोग धड़ल्ले से हो रहा है । निर्दोष व्यक्तियों पर छेड़खानी या दुष्कर्म का झूठा आरोप लगाकर पैसे ऐंठना धंधा बन चुका है। ऐसी लड़कियों के गिरोह सक्रिय होने की बात पुलिस ने कही है। हाल ही में जयपुर पुलिस ने एक लड़की की शिकायत के आधार पर इंजीनियरिंग के एक छात्र को दुष्कर्म के आरोप में गिरफ्तार किया। कुछ दिन पहले उस छात्र ने आरोप लगानेवाली लड़की को लिफ्ट दी थी। बाद में वह लड़की उस छात्र के घर पहुँच गयी और उससे १ लाख रुपयों की माँग की। रुपये नहीं मिलने पर लड़की ने उस लड़के के खिलाफ थाने में दुष्कर्म की रिपोर्ट दर्ज करवा दी।

पूछताछ में लड़की ने अपना फर्जी नाम बताया। जाँच में सामने आया कि वह लड़की ब्लैकमेलिंग कर जयपुर के अलग-अलग १० थानों में इसी प्रकार के १० से भी ज्यादा मामले दर्ज करा चुकी है। लड़की ने पूछताछ में बताया कि 'ऐसी कई लड़कियाँ हैं जो इस तरह ब्लैकमेल कर युवकों और उनके परिवारवालों से रुपये ऐंठती हैं और रुपयों की माँग पूरी न होने पर थाने में मुकदमा दर्ज करा देती हैं।'

एक अन्य घटना में बूँदी (राज.) के सरकारी स्कूल की शिक्षिका ने ४ लोगों के खिलाफ सामूहिक दुष्कर्म का आरोप लगाया था लेकिन मामले की जाँच करने पर बलात्कार की कहानी झूठी निकली।

(बेकसूर लोगों को झूठे मामलों में फँसाने की कई घटनाएँ आये दिन सुनने को मिलती हैं। इस प्रकार के झूठे मामलों से न केवल बेकसूर लोग बदनाम होते हैं बल्कि समाज में महिलाओं को नौकरी आदि से भी लोग हटा रहे हैं। नुकसान तो महिलाओं का ही हो रहा है। अतः इन कानूनों में सुधार करने की दिशा में सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिए। महिला सुरक्षा के कानूनों का दुरुपयोग कर एक पुरुष पर झूठा मुकदमा होता है तो उसके सम्पर्क में आनेवाली महिलाएँ - माँ, बहनें, भाभी आदि भी दुःखी होती हैं। महिलाओं की सुरक्षा का कानून कई महिलाओं के लिए दुःख की वजह बन जाता है। हिन्दू धर्म-विरोधी साजिशवालों का मोहरा बनी लड़की के कारण बापू को माननेवाली करोड़ों महिलाओं को कष्ट पहुँच रहा है, वे दुःखी हो रही हैं। पॉक्सो जैसे अभागे कानून में शीघ्रातिशीघ्र संशोधन किया जाय।

– श्री आर.एन. ठाकुर)

संत-सम्मेलन, छिंदवाड़ा

श्री गोविंद शेंडेजी, महामंत्री, विश्व हिन्दू परिषद (जबलपुर) : इस समाज के जो श्रद्धा के केन्द्र हैं उनको बदनाम करने का काम किया जा रहा है। मेरा प्रश्न है मीडिया से कि कल जब आशारामजी बापू अदालत द्वारा बाइज्जत बरी होकर आयेंगे तो जिस मीडिया ने घंटों टीवी के ऊपर निंदा की है, चरित्रहनन करने का पाप किया है, क्या ये लोग टीवी पर फिर से आशारामजी बापू की सच्चरित्रता का वर्णन करेंगे ? क्या उनसे क्षमा माँगेंगे ?

पंडित शशिकांत तिवारीजी, पतंजलि योगपीठ के प्रचारक, छिंदवाड़ा : हमारे भारतीयों को जो ईसाई बनाया जा रहा है उसे श्रद्धेय आशारामजी ने रोकने का काम तो किया ही है, साथ ही बहुत बड़े आदिवासी समुदाय, जो ईसाई हो चुके थे, उनको आपने ईश्वरभक्ति के माध्यम से अपने धर्म में वापस लाया है, यह अपने-आपमें बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसी उपलब्धि को देखते हुए जो सारी मिशनरियाँ हैं वे घबरायी हुई थीं। इसीलिए हमारी आस्थाओं पर चोट की जा रही है और देश को गुलाम बनाने की दिशा में आगे बढ़ाया जा रहा है।

श्री राजेन्द्रस्वरूपजी, श्रीराम कथाकार, मानसरोवर : जो भारत को विश्वगुरु बनाने का प्रयास कर रहे हैं, विश्व को आनेवाले महायुद्ध से बचाने का प्रयास कर रहे हैं, ऐसे महापुरुष को क्या कारागार में होना चाहिए ? ब्रह्मचर्य के ओज-तेज को समाज में फैलाने के लिए जिन महापुरुष ने पूरा जीवन लगा दिया, जो स्वयं ब्रह्मचर्य के प्रतीक हैं और असंख्यों को ब्रह्मचर्य की महिमा के बारे में बताते रहे हैं ऐसे ७५ साल के महापुरुष को इतने घृणित झूठे आरोपों में फँसाकर कारावास भेजा गया !

(उपरोक्त संतों के अलावा श्री नागेन्द्र ब्रह्मचारीजी, साध्वी सरस्वतीजी, साँईं किरणजी महाराज (शिरडी) आदि संतों ने भी सम्मेलन में उपस्थित होकर संस्कृति-रक्षा का संदेश दिया।)

शशकासन

लाभ : आज्ञाचक्र का विकास होता है, निर्णयशक्ति बढ़ती है। जिद्दी व क्रोधी स्वभाव पर भी नियंत्रण होता है । शशकासन एड्रिनलिन हार्मोन को संतुलित करने में बड़ा सहायक होता है । शरीर में इस हार्मोन के संतुलित उत्पादन से शारीरिक एवं मानसिक चंचलता धीरे-धीरे कम हो जाती है । इस हार्मोन के अनियंत्रण से शारीरिक एवं मानसिक उत्तेजना उत्पन्न होती है, जिससे अनिद्रा, मानसिक अवसाद (मेंटल डिप्रेशन), हाई बल्डप्रेशर, मधुप्रमेह आदि अनेक बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं।

विधि : वज्रासन में बैठ जायें। श्वास लेते हुए बाजुओं को ऊपर उठायें व हाथों को नमस्कार की स्थिति में जोड़ दें। श्वास छोड़ते हुए धीरे-धीरे आगे झुककर मस्तक जमीन पर लगा दें। जोड़े हुए हाथों को शरीर के सामने जमीन पर रखें व सामान्य श्वास-प्रश्वास करें। धीरे-धीरे श्वास लेते हुए हाथ व सिर उठाते हुए मूल स्थिति में आ जायें।

विशेष : **'ॐ गं गणपतये नमः'** मंत्र का मानसिक जप व गुरुदेव, इष्टदेव की प्रार्थना-ध्यान करते हुए शरणागति के भाव से इस स्थिति में पड़े रहने से भगवान और सद्गुरु के चरणों में प्रीति बढ़ती है व जीवन उन्नत होता है। रोज सोने से पहले व सवेरे उठने के बाद ५ से १० मिनट तक ऐसा करें।

पुण्यदायी तिथियाँ

९ जून : निर्जला-भीम एकादशी (वर्षभर की एकादशियों का फल देनेवाला तथा मेरु पर्वत के समान पापों को भस्म करनेवाला व्रत । इस दिन किया गया स्नान, दान, जप, होम आदि सब अक्षय होता है।)

१० जून : वटसावित्री व्रतारम्भ (पूर्णिमांत पक्ष)

१२ जून : व्रत पूर्णिमा, वट पूर्णिमा

१५ जून : षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : सुबह ११-०३ से शाम ५-२७ तक)

२१ जून : दक्षिणायन आरम्भ (पुण्यकाल : सूर्योदय से शाम ४-२२ तक)

२३ जून : योगिनी एकादशी (महान पापों को शांत करके महान पुण्य देनेवाला व्रत। इसके व्रत से ८८ हजार ब्राह्मणों को भोजन कराने का फल मिलता है।)

२९ जून : रविपुष्यामृत योग (सुबह ८-५९ से ३० जून सूर्योदय तक)

१ जुलाई : मंगलवारी चतुर्थी (सूर्योदय से रात्रि १०-२५ तक)

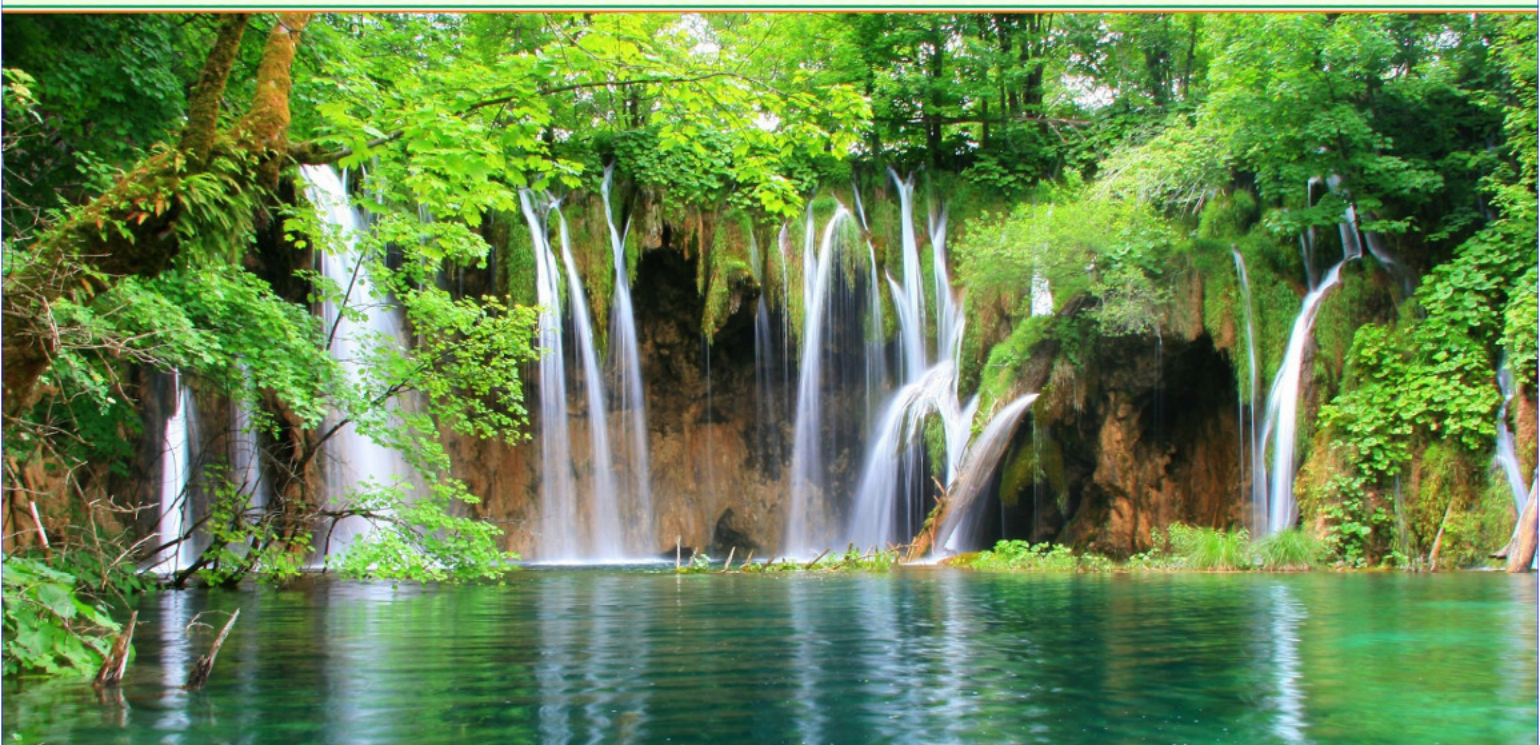

गर्मी में शीतलता हेतु सरल प्रयोग

ग्रीष्म ऋतु में स्वाभाविक उत्पन्न होनेवाली कमजोरी, बेचैनी आदि परेशानियों से बचने के लिए ताजगी देनेवाले प्रयोग :

(१) धनिया पंचक : धनिया, जीरा व सौंफ समभाग मिलाकर कूट लें। इस मिश्रण में दुगनी मात्रा में काली द्राक्ष व मिश्री मिलाकर रखें।

उपयोग : एक चम्मच मिश्रण २०० मि.ली. पानी में भिगोकर रख दें। दो घंटे बाद हाथ से मसलकर छान लें और सेवन करें। इससे आंतरिक गर्मी, हाथ-पैर के तलवों तथा आँखों की जलन, मूत्रदाह, अम्लपित्त, पित्तजनित शिरःशूल आदि से राहत मिलती है। गुलकंद का उपयोग करने से भी आँखों की जलन, पित्त व गर्मी से रक्षा होती है।

(२) ठंडाई : जीरा व सौंफ दो-दो चम्मच, ४-४ चम्मच खस व तरबूज के बीज, १५-२० काली मिर्च तथा २०-२५ बादाम रातभर पानी में भिगोकर रखें। सुबह बादाम के छिलके उतारकर सब पदार्थ खूब अच्छे से पीस लें। एक किलो मिश्री अथवा चीनी में चार लीटर पानी मिलाकर उबालें। एक उबाल आने पर थोड़ा-सा दूध मिलाकर ऊपर का मैल निकाल दें। अब पिसा हुआ मिश्रण, एक कटोरी गुलाब की पंखुड़ियाँ तथा १०-१५ इलायची का चूर्ण चाशनी में मिलाकर धीमी आँच पर उबालें। चाशनी तीन तार की बन जाने पर मिश्रण को छान लें, फिर ठंडा करके काँच की शीशी में भरकर रखें।

उपयोग : ठंडे दूध अथवा पानी में मिलाकर दिन में या शाम को इसका सेवन कर सकते हैं। यह सुवासित होने के साथ-साथ पौष्टिक भी है। इससे शरीर की अतिरिक्त गर्मी नष्ट होती है, मस्तिष्क शांत होता है, नींद भी अच्छी आती है।

देशभर में हो रहे हैं विद्यार्थियों के लिए विशेष शिविर

बाल्यकाल में हमें जैसे संस्कार मिलते हैं, हमारा जीवन वैसा ही बन जाता है। इसलिए पूज्य बापूजी के सान्निध्य में पिछले अनेक वर्षों में समय-समय पर 'विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविरों' का आयोजन तो होता ही रहा है, साथ ही बापूजी की प्रेरणा से प्रशिक्षित साधकों द्वारा गर्मियों एवं दिवाली की छुट्टियों में देशभर में 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों' का आयोजन किया जाता है।

विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने व उन्हें नैतिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक रूप से उन्नत बनाने हेतु ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में इस वर्ष भी देशभर में शिविरों का आयोजन हो रहा है । छत्तीसगढ़ के रायपुर, बिलासपुर, राजनांदगाँव, कबीरधाम, नंदिनीनगर, मोतीपुर, खुर्सीपुर, लाल बहादुर नगरसहित ७५ स्थानों पर, गुजरात के भावनगर, अहमदाबाद, राजकोट, बड़ौदा, नवसारी, वापी, मोडासा, जामनगर, वल्लभीपुर, सूरत, पुंसरी, महाराष्ट्र के डोंबीवली, मूर्तिजापुर, सोलापुर, मालेगाँव, अमरावती, नासिक, सांगली, राजस्थान के पाली, सुमेरपुर तथा कासगंज (उ.प्र.), भिवानी (हरि.), पटियाला (पंजाब), भुवनेश्वर, गाजियाबाद, पश्चिमी दिल्ली आदि स्थानों पर अप्रैल माह में शिविर हो चुके हैं । इसके अलावा देश के अन्य सैकड़ों स्थानों पर ये शिविर चालू हैं अथवा होनेवाले हैं । इतने कुप्रचार के बावजूद इन शिविरों में विद्यार्थियों की संख्या में कोई कमी नहीं आयी है बल्कि और बढ़ रही है।

इन शिविरों में विद्यार्थियों को बुद्धि व मेधा शक्तिवर्धक प्रयोग एवं परीक्षा में सफलता पाने की कुंजियाँ सिखायी गयीं । शिविर में आनेवाले बच्चों को संयमी, सदाचारी, उच्च लक्ष्यनिष्ठ व सामर्थ्यवान बनानेवाले पूज्य बापूजी के विडियो सत्संग का लाभ मिला, जो बच्चों के अचेतन मन पर सकारात्मक प्रभाव डालता है तथा नकारात्मक विचारों को हटाता है। तन-मन को सुदृढ़ बनाने हेतु योगासन, प्राणायाम, विभिन्न यौगिक प्रयोग तथा एकाग्रता बढ़ाने की युक्तियाँ भी शिविर में सिखायी गयीं । इन शिविरों में विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं खेलों का भी आयोजन हुआ, जिनमें विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया गया। पूज्य बापूजी की बगिया के ये संस्कारी बच्चे ही आगे चलकर भारत को विश्वगुरु पद पर पहुँचायेंगे।

गाय का दूध पीनेवाले बच्चे होते हैं ज्यादा समझदार व ताकतवर

देशी गाय का दूध शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक शक्ति में वृद्धि करता है। गोदुग्ध में तेज तत्त्व अधिक मात्रा में एवं पृथ्वी तत्त्व बहुत कम मात्रा में होने से इसका सेवन करनेवाला विद्यार्थी प्रतिभासम्पन्न व तीव्र ग्रहण शक्तिवाला हो जाता है । गोदुग्ध में उपस्थित 'सेरीब्रोसाइड्स' मस्तिष्क को ताजा रखने एवं बौद्धिक क्षमता बढ़ाने के लिए उत्तम टॉनिक का काम करते हैं।

'डूडी विश्वविद्यालय' के शोधकर्ताओं द्वारा इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, इटली तथा बेल्जियम के १५० बच्चों पर एक अध्ययन किया गया। इन बच्चों को दो समूहों में बाँटा गया। एक समूह उन बच्चों का था जो नियमित रूप से दूध पीते थे और दूसरे समूह में वे बच्चे थे जो दूध नहीं पीते थे । अध्ययन के बाद शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अन्य पोषक आहार का सेवन करनेवाले लेकिन दूध न पीनेवाले बच्चों के मुकाबले में दूध पीनेवाले बच्चे ज्यादा समझदार व ताकतवर होते हैं । इससे बच्चों का बेहतर विकास होता है। दूध के सेवन से न केवल दिमागी शक्ति में वृद्धि होती है बल्कि समस्याओं का भी बेहतर ढंग से समाधान कर पाना सम्भव होता है।

शोध से यह भी पता चला कि दूध पीनेवाले बच्चों में निम्न रक्तचाप से लड़ने की क्षमता भी अधिक होती है । 'अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान' (एम्स) के अनुसार 'हड्डियों के रोगों से बचने के लिए छोटी उम्र से ही दूध पीने की आदत डालनी चाहिए। नियमित रूप से दूध पीनेवाले लोगों में बीमारियाँ नहीं पनपतीं, उन्हें कमजोरी नहीं सताती।'

गाय का दूध पीनेवाला व्यक्ति प्रसन्न रहता है। गाय के दूध में 'ट्रिप्टोफेन' सबसे अधिक पाया जाता है जो 'सेरोटोनिन' हार्मोन की कमी नहीं होने देता। इस हार्मोन की कमी से ही आदमी की मनोदशा खराब होती है।

यदि आप चाहते हैं कि आपका शरीर सुंदर एवं सुगठित हो, वजन एवं कद में खूब वृद्धि हो, आप मेधावी और प्रचंड बुद्धिशक्तिवाले व विद्वान बनें तो नियमित रूप से देशी गाय के दूध, घी, मक्खन का सेवन करें । दूध को खूब फेंटकर झाग पैदा करके धीरे-धीरे घूँट-घूँट पीना चाहिए । इसका झाग त्रिदोषनाशक, बलवर्धक, तृप्तिकारक व हलका होता है।

ये विशेषताएँ केवल देशी गाय के दूध में ही होती हैं। जर्सी गाय, भैंस अथवा बकरी आदि के दूध से उपरोक्त लाभ नहीं होते।

सावधानी : दूध को खूब उबाल-उबालकर गाढ़ा करके पीना हानिकारक है।

गुरुकृपा से विदेश में बजा भारत का डंका

पहले मैं एक साधारण विद्यार्थी था लेकिन पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा लेने के बाद मेरे जीवन में चार चाँद लग गये। बापूजी के बताये अनुसार नियमित मंत्रजप, त्राटक, ध्यान, प्राणायाम करने से मेरी बुद्धि में विलक्षण परिवर्तन आया। मेरा आई.आई.टी. में चयन हुआ और भारत के प्रसिद्ध इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश मिला। इसी बीच मुझे विश्वविख्यात शोध संस्थान सीमेंस कार्पोरेट रिसर्च, न्यूजर्सी (यूएसए) से काम करने का बुलावा आया, जिसमें मैं भारत से अकेला ही विद्यार्थी था। मेरी खोज को अमेरिका की एक अंतर्राष्ट्रीय पब्लिशिंग कम्पनी ने अपनी किताब में प्रकाशित किया। इसी दौरान मुझे अमेरिका की प्रसिद्ध कोलम्बिया यूनिवर्सिटी (न्यूयॉर्क) में पढ़ाई हेतु प्रवेश मिल गया। यहाँ किये गये शोधकार्यों को अमेरिका के टीवी चैनलों एवं अखबारों में सराहा गया और विश्व की कई कॉन्फ्रेंसेस में प्रस्तुत भी किया गया।

जुलाई २०१० में लंदन के एक बड़े बैंक बारक्ले ने पूरे विश्व में मोबाइल गेमिंग प्रतियोगिता आयोजित की थी। इसमें भाग लेनेवाले विश्व के एक करोड़ २५ लाख लोगों में मेरा अमेरिका में प्रथम और विश्व में द्वितीय स्थान आया। पुरस्कार में १०,००० पाउंड (१०,००,००० रु.) मिले। ये सब सफलताएँ पूज्य बापूजी की कृपा से ही मिलीं। गुरुकृपा ने कहाँ-से-कहाँ पहुँचा दिया। परंतु बापूजी के सत्संग से जो आध्यात्मिक लाभ हुए उनके आगे ये संसारी उपलब्धियाँ तुच्छ लगती हैं।

अमेरिका जैसे भोग-प्रधान देश में संयम-सदाचार, सच्चरित्रता का पालन असम्भव जैसा है परंतु यहाँ रहकर भी मैं भोग-विकारों से बचकर बापूजी के बताये मार्ग पर चल पा रहा हूँ तो यह केवल पूज्य गुरुदेव से मिली मंत्रदीक्षा और सत्संग का ही प्रभाव है। मुझ जैसे लाखों-करोड़ों विद्यार्थियों को बापूजी ने सन्मार्ग पर लगाया है और यह बात देश को तोड़नेवाली ताकतों को हजम नहीं हुई इसीलिए इन्होंने षड्यंत्र करके बापूजी को फँसा दिया। बापूजी पर लगाये गये आरोप झूठे और बेबुनियाद हैं।

– श्री कपिल ढींगरा
सांता बारबरा, कैलिफोर्निया (यूएसए)

सर्वांगीण विकास की कुंजियाँ

स्मरणशक्ति बढ़ाने हेतु : प्रतिदिन १५ से २० मि.ली. तुलसी रस, एक चम्मच च्यवनप्राश व थोड़ी-सी किशमिश का घोल बना के सारस्वत्य मंत्र अथवा गुरुमंत्र जपकर पियें। ४० दिन में चमत्कारिक फायदा होगा।

पढ़ा हुआ याद रखने हेतु : (१) अध्ययन के समय पूर्व या उत्तर की ओर मुँह करके सीधे बैठें।

(२) सारस्वत्य मंत्र का जप करके जीभ की नोक को तालू में लगाकर पढ़ें।

(३) अध्ययन के बीच-बीच में व अंत में शांत हों और पढ़े हुए का मनन करें। भगवद्सुमिरन करके शांत हों।

शरीरपुष्टि हेतु : (१) भोजन से पहले हरड़ चूसें व भोजन के साथ भी खायें।

(२) रात्रि में एक गिलास पानी में एक नींबू निचोड़कर उसमें १५-२० किशमिश भिगो दें। सुबह पानी छानकर पी जायें व किशमिश चबाकर खा लें।

स्वर्ग-सुख तो चिपक ही जायेगा

– पूज्य बापूजी

एक बार हम यहाँ (अहमदाबाद) से १५-२० कि.मी. दूर किसी संत की जगह है, वहाँ गये थे। यह आश्रम (अहमदाबाद आश्रम) नहीं बना था तब की बात है। वहाँ एक दूसरे संत भी आये थे। वहाँ एक बेंच थी। हम दोनों जैसे ही उस पर बैठने जा रहे थे तो उन संत का एक चेला, जो बिल्डर था, उसने जल्दी से रूमाल निकाला और बेंच साफ कर दी।

उन महाराज ने कहा : ''अरे भाई ! रहने दे न ! अगर ईश्वरप्राप्ति नहीं करनी है तो इतनी सेवा करने से ही स्वर्ग का सुख चिपकेगा ।'' फिर मेरी ओर देखा, मैं भी खूब हँसा और वे भी खूब हँसे।

कितनी सावधानी की बात बता दी। ईश्वरप्राप्ति का इरादा नहीं बना हो तो इतनी सेवा से भी स्वर्ग का सुख तो चिपकेगा ही। लोग क्या-क्या करते हैं स्वर्ग की प्राप्ति के लिए लेकिन ब्रह्मवेत्ता की इतनी छोटी-सी सेवामात्र से स्वर्ग का सुख तो चिपक ही जायेगा। ऐसा नहीं कहा कि 'मिलेगा', कहा कि 'चिपकेगा' अर्थात् तुम उससे बचना। स्वर्ग के सुख में ही उलझ न जाना, ईश्वरप्राप्ति के रास्ते चलना। कहने में कितनी ऊँचाई है !

बिना ऑपरेशन के ट्यूमर गायब !

जनवरी २००८ की बात है। मेरे पेट में भयंकर दर्द होने लगा। एक-दो नहीं, ७-७ डॉक्टरों को दिखाया, कई बार सोनोग्राफी करवायी। सभीने बच्चेदानी में ट्यूमर बताया। बहुत इलाज कराया पर कोई फायदा नहीं हुआ।

जून २००९ में पूज्य बापूजी वाराणसी में सत्संग हेतु पधारे। तब मुझे सत्संग व मंत्रदीक्षा का सौभाग्य मिला। मैंने पूज्य गुरुदेव के सामने करुणभाव से प्रार्थना की कि 'हे गुरुदेव ! अब आप ही मुझे इस भयंकर पीड़ा से निजात दिलाइये।' घर आकर मैंने संकल्प लिया और रोग-निवारण के लिए गुरुमंत्र का जप करना शुरू कर दिया। सारी दवाएँ बंद कर दीं। गुरुदेव की ऐसी कृपा हुई कि मात्र २ महीने में ही ट्यूमर ठीक हो गया। आज मैं बापूजी की कृपा से पूर्ण स्वस्थ हूँ।

ऐसे परमात्मस्वरूप अंतर्यामी गुरुदेव के श्रीचरणों में शत-शत नमन !

– पूनम दीक्षित, वाराणसी (उ.प्र.)

देशभर में हुए 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों' तथा 'योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रमों' की कुछ झलकियाँ

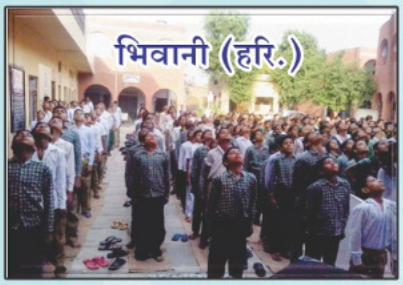

अनगुल (ओड़िशा) व चंडीगढ़ के विद्यार्थियों में नोटबुक-वितरण

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।

देशभर में लगातार चल रहे विभिन्न सेवाकार्यों की एक झलक

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2012
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 30-06-2014)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

भंडारे एवं जीवनोपयोगी सामग्रियों का वितरण

नासिक

अंबाला (हरि.)

भुवनेश्वर

कोटा-रायपुर (छ.ग.)

हैदराबाद

अनगुल (ओड़िशा)

उदयपुर (राज.)

निःशुल्क छाछ व शरबत वितरण

सुमेरपुर (राज.)

अनगुल (ओड़िशा)

रीवा (म.प्र.)

करोलबाग-दिल्ली

रायपुर (छ.ग.)

निर्दोष पूज्य बापूजी की रिहाई के लिए पिछले करीब ९ महीनों से देशभर में सतत चल रहे हैं हवन-यज्ञ, धरने, संत-सम्मेलन एवं रैलियाँ...

संत-सम्मेलन, जम्मू

जंतर-मंतर, दिल्ली

अहमदाबाद

पेटलावद (म.प्र.)

काठमांडू (नेपाल)

लुधियाना

मालेगाँव (महा.)

गोरखपुर (उ.प्र.)

लखनऊ

औरंगाबाद (बिहार)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।